प्रकाषक

विजय चिकन कौल का कल्मी नाम **विजय षबनम** है। उस का जन्म 1951 ई0 में श्री नगर कश्मीर में हुआ। 1972 ई0 में कश्मीर विश्वविद्यालय से गांधी मेमोरियल कॉलेज द्वारा विज्ञान में डिग्री प्राप्त की। लेखाविधि में प्रशिक्षण प्राप्त करके उसने एक लघु उद्योग लगाने के लिए काफी प्रयत्न किया और एक सफल व्यवसाई होकर कई व्यवसायक संगठनों में भी सक्रय रहा। वे कई सामाजिक कार्यों में भी व्यस्त रहते थे। लिखने का आरम्भ गीत, गज़ल तथा नाटक से किया। परन्तु व्यवसायक क्षेत्र में धुसने से इन सब पर विराम लगा। विस्थापन के बाद जम्मू में विजय जी ऊर्दू समाचार पत्र "शारदा" में कई लेख तथा टिप्पनियाँ लिखता रहा।

सन् 2013 ई0 में उन्होनें फिर लिखना आरम्भ कर दिया। शबनम की उपाधि, डा0 रोशन सराफ जो स्वयं **बहु–भाषी** लेखक, गीतकार तथा गायक हैं, ने इन में एक कवि की पहचान कर दी है।

प्रकाशक

विजय षबनम

प्रस्तावना

कश्मीर धरती का एक ऐसा खण्ड है जो धरती का स्वर्ग कहलाता है। इसके पीछे एक लम्बा इतिहास है और यहाँ के लोग पाँच हज़ार से अधिक वर्षों पर गर्व महसूस करते हैं, परन्तु उन्होंने बहुत सारे शासकों के कुशासन से काफी संकट भी उठाया है। लेकिन बहुत सारे अच्छे और सकारात्मक सोंच वाले राजाओं ने इस घाटी को स्वर्ग जैसा बना दिया है। लोगों ने उनके राज्य में बहुत सन्तुष्टि प्राप्त की। कश्मीर संस्कृत पठन–पाठन का केन्द्र रहा है और यह भाषा घाटी में सम्पर्क करने का माध्यम रहा है। बहुत सारे लेखकों ने इस भाषा में बहु–मूल्य पुस्तकें लिखी हैं।

प्रसिद्ध इतिहासकार और कवि पंड़ित कल्हण ने राजतरंगिणी नाम से कश्मीर का इतिहास लिखा है। दूसरे और जिन्होंने पूर्व काल में कश्मीर के विश्य में लिखा है उनमें अभिनव गुप्त, आनन्द वंमण, क्षेमेन्द्र तथा विल्हण आदि हैं। इन सब ने भिन्न–भिन्न शीर्षकों से लिखा है सब का विषय बिन्धु शिवमत था, परन्तु झौनराजा ने अपनी लेखनी में ऐतिहासिक तरक भी दिए हैं। पंण्ड़ित कल्हण ने पुस्तक लिखने से प्रथम हर सम्भंव तथ्य इक्कठा किए तथा उन हर स्थानों पर संचय गया और वहाँ तथ्यों का पता लगाकर लिखने में जुट गया।

राजतरंगिणी को अन्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध उस समय प्राप्त हुई जब डा० मार्क ऑरल सिटेन ने इस पुस्तक का अंग्रेज़ी में 1889 ई० में अनुवाद किया। वह हर उस स्थान पर गया जिसकी व्याख्या कल्हण पंड़ित ने राजतरंगिणी में की थी। वहाँ खोज की और उसके इन ही प्रयासों से राजतरंगिणी को एक ऐतिहासिक पुस्तक के रुप मे अंतराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई। डा० सिटेन

कल्हण की लेखनी से इतना प्रभावित था कि उसने अपनी एक और पुस्तक लिखी "मेमोईर दि एन्शेन्ट ज्योग्राफी ऑफ कश्मीर" *(जो उसने 1899 ई० में लिखी गई)* इस में राजतरंगिणी में दरज कई स्थानों तथा घटनाओं का उल्लेख किया गया है। राजतरंगिणी का अनुवाद तथा उसपर की हुई टिप्पनियों मे कुछ कश्मीरी विद्वानों ने उनकी बहुत सहायता की है उनमें पंडित मुकुन्द राम शास्त्री, पंडित हरबट शास्त्री तथा पंडित गोबिन्द कौल प्रमुख हैं।

राजतरंगिणी का कई और भाषाओं में अनुवाद हुआ है। सर्वप्रथम 16 वीं शताब्दी में सुल्तान जैनुलाब्दीन बड़शाह ने इसका फारसी में अनुवाद कराया और शीर्षक रखा गया था "बिहारुल असमीर"। सम्राट अकबर ने अब्बदुल कादिर अलबदूनी को सरल भाषा मे इस पुस्तक को लिखने का आदेश दिया है जो उसने सहजता से पूरा किया। अब्बुल फज़ल ने भी कल्हण की राजतरंगणी का उल्लेख अपनी पुस्तक आईन अकबरी में किया है। इसके अतिरिक्त सम्राट जहांगीर के राज्यकाल में हैदर मालिक ने भी सरल फारसी भाषा मे राजतरंगिणी का अनुवाद करवाया है। कोलकता के जोगेश चन्द्र दत्त ने 1887 ई० में "किंगस आफ कश्मीर" के शीर्षक से राजतरंगिणी का अनुवाद तीन खण्ड़ो में त्यौर किया। पंडित जवाहर लाल नेहरु के बहनोई रंजीत सीता राम पंड़िता ने 1892 ई० में राजतरंगिणी का अनुवाद किया है। इस पुस्तक को बाद में साहित्य ऐकादमी ने प्रकाशित किया है। इस पुस्तक का अनुवाद कश्मीर भाषा में जे एन्ड के एकादंमी ऑफ आर्ट कल्चर एन्ड लेंगवेज़िज ने तीन खण्ड़ो मे प्रकाशित किया। पहले खण्ड में पहले चार तरंगों के अनुवाद हैं जिनका अनुवाद सर्व श्री अर्जुन देव मजबूर, बशीर बशर, और मोती लाल साकी ने किया है दूसरे खण्ड़ में पाचवां छटवां तथा सातवीं तरंग का अनुवाद है जिसके अनुवादक सर्व श्री ज़फर मुजफर, सईद रसूल पॉम्पर तथा मुजफर अहमद खाँ हैं। तीसरे खण्ड़ में आठवीं तरंग है, जिसका अनुवाद श्री बशर बशीर ने किया है।

कश्मीर के विषय पर बहुत सारे लेखकों ने बहुत कुछ लिखा है। इन में लारिन्स की "वेली ऑफ कश्मीर" हसन की "बहरिस्तान–ऐ–शाही" पी एन के बमजाई की "कल्चर एन्ड पालटिकल हिस्ट्री ऑफ कश्मीर" असीर कश्तवाड़ी और वली महम्मद की "फोक्सा ऑन जम्मू एण्ड कश्मीर" परवेज दीवान की "जम्मू कश्मीर और लद्धाख" डा० सविता खोसला की "बुद्धइज़म इन कश्मीर" तथा

सी–एल गड्डू की कश्मीर हिन्दू श्राईनज़। इसके अतिरिक्त और भी लेखक इस कार्य को और बड़ा रहे हैं।

मैंने भी कश्मीर के इतिहास को सरल रुप में लिखने का एक छोटा सा प्रयास किया है। मैंने राजतरंगिणी एंव नीलगत पुराण को इस पुस्तक का आधार बनाया है। अधिक सरलता से प्रस्तुत करने वश मैने घटनाओं को कहानियों के रुप में प्रस्तुत किया है। पुस्तक को सार्थक बनाने की अभिलाशा से बहुत सारे ग्रन्थों का अध्ययन करने के बाद ही लिखने के कार्य का श्री गणेश किया।

प्रमुखता जिन पुस्तकों का अध्ययन किया गया है उन में डा० ऑरल स्टिेन की अनुवादित राजतरंगिणी तथा उसकी लिखी पुस्तक "मेमोईर, दि एन्शेन्ट जोग्राफी ऑफ कश्मीर", जे. सी. दत्त की "किंगस ऑफ कश्मीर" रंजीत सीताराम पंड़ित की अनुवादित राजतरंगिणी, डा० वेद कुमारी गई की अनुवादित नीलमत पुराण डा० सरला खोसला की बुद्धइजम इन कश्मीर। मैं इन सब लेखक लेखिकाओं का ऋणी हूँ और अपना आभार प्रकट करता हूँ। इस पुस्तक के निर्माण हेतु कई लोगों ने मेरी सहायता की है, उन सबका में हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। सर्वप्रथम मै पीरज़ादा मोहम्द अश्रफ, डिप्पटी डाईरेक्टर जे एन्ड के स्टिेट आरचिवीज एन्ड रिपराजंटी का आभार प्रकट करता हूँ जिन्हों ने मेरी लेखनी के लिए हर प्रकार से राहायता की है। फोटो भेजने के लिए में मीर ज़फर इकबाल, इन्जीन्यर इरफान नौशेहरी का आभारी हूँ बॉली वुड में कार्यरत अशुतौष कौल ने भिन्न–भिन्न विषयों पर मेरी सहायता की है। विशेष तौर पर उसने प्रथम पृष्ठ पर लेखनी को संपादित करके एक विशेष कार्य किया।

पूर्व राज्य मन्त्री, (जम्मू कश्मीर) श्री रमण भटटू तथा डा० रोशन सराफ जो पेशे से एक डाक्टर और शौक से बहुभाषी लेखक कवि और गायक हैं, ने मेरी कई तरीकों से निगरानी एवं सहायता की, इन दोनों का मै हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे इस कार्य को और जिन्होंने सफल बनाया है उनमें सर्व श्री एम के कौल *(सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकत्ता)* उपेन्द्र बट्ट (चार्टड अकाउंटेंट) सुजीत कौल (एग्रीकल्चर ऑफिसर) रतना धर (हिन्दी–विशेषज्ञ), उषा भट्ट और रेणू दूबे (शिक्षा विशेषज्ञ) है उसके अतिरिक्त, मै शीला डेन्धी (शिक्षा विशेषज्ञ) का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिसने मेरी लेखनी का अंतिम संशोधन किया है।

मेरा शीश डा० रतन लाल शान्त के सामने झुक जाता है, जिसने इस पुस्तक पर न केवल प्राक्कथन लिख कर मेरा कद बहुत ऊँचा कर दिया है अपितु मेरा मार्ग दर्शक बनकर मुझे ऋणी बना दिया है। मेरी कृतज्ञता तब तक अधूरी रहेगी जब तक मै गोकुल डेम्बी, जो एक विख्यात चित्रकार और दार्शनिक है, का आभार न प्रकट करूँ, जिसने इस पुस्तक का प्रथम और अन्तिम प्रष्ठ तैयार करके मेरी इस कौशिश को जीवान्त कर दिया है

मैं उस महान व्यक्ति को नमन करता हूँ जो सदा मेरा पथ–प्रदर्शक रहा है। वह व्यक्ति और कोई नहीं अपितु श्री अवतार कृष्ण दीवानी हैं, जो डारेक्टर फाइनेंस रह चुके है। इसके अतिरिक्त शैशिक संस्थानों का प्रधान रहकर उन में नई उर्जा भरकर काया कलप कर दिया है। यह श्री दीवानी ही है जिन्होंने मुझे कश्मीर के इतिहास पर लिखने के लिए प्रेरित किया है। इस पुस्तक का अंग्रेज़ी संस्करण के लिए बड़ा जोर पकड़ रहा है। इस संदर्भ में श्री विकास राजदांन ने कलम हाथ में पकड़ा। श्री राज़दान पेशे से इंजीनियर तथा शौक से लेखक हैं।

मेरी कृतिज्ञता तब तक अघूरी रह जाएगी अगर मै अपनी अर्धांगिणी सनतोष कौल का वर्णन नहीं करुँगा। मैं उसका मन से स्वागत करता हूँ जिस की सहायता तथा प्रोत्साहित व्यवहार से यह कार्य सम्पन्न हुआ, नहीं तो यह सब कुछ सम्भव ही नहीं था।

धन्यवाद

विजय शबनम